❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
Arya Sandesh TV
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 44, अंक 8 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 11 जनवरी, 2021 से रविवार 17 जनवरी, 2021
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

चांदनी चौक के हनुमान मन्दिर को तोड़ने पर आर्य समाज द्वारा जबरदस्त प्रदर्शन

पुराने धार्मिक भवनों पर भेदभाव की नीति के खिलाफ जारी रहेगा संघर्ष

10 जनवरी, चांदनी चौक दिल्ली।

आर्य समाज सदैव हिंदुओं का सजग प्रहरी रहा है। जब-जब हिंदू समाज के सामने कोई समस्या आई तब-तब आर्य समाज ने अग्रणी भूमिका निभाई । गत दिनों दिल्ली के चांदनी चौक में स्थित प्राचीन हनुमान मन्दिर को तोड़े जाने पर आर्य समाज में काफी आक्रोष व्याप्त था। इसके लिए आर्य समाज के शीर्ष नेतृत्व ने सरकार से यह मांग भी की थी कि मन्दिर को तोड़ने वालों के खिलाफ उचित कार्यवाही के साथ पुनः उसी स्थान पर हनुमान मन्दिर का निर्माण किया जाए।

अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं ने दी सहर्ष गिरफ्तारी
पुलिस के साथ हुई नोक-झोक में डटे रहे युवा कार्यकर्त्ता

10 जनवरी 2021, रविवार को दल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी के नेतृत्व में, राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष श्री आनन्द कुमार जी, आर्य जगत के अनेक संन्यासीगण, श्री जोगेंद्र खट्टर जी, श्री सुरेन्द्र आर्य जी, आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के महामंत्री श्री बृहस्पति आर्य जी, श्री दिनेश शास्त्री जी एवं आर्य समाज के कार्यकर्त्ता, सदस्य, माताओं-बहनों ने मिलकर मन्दिर तोड़े जाने के विरोध में शांतिपूर्ण तरीके से प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के दौरान कार्यकर्त्ताओं द्वारा महापुरुषों के नाम के जयघोष लगाए जा रहे थे तभी पुलिस वालों ने उन्हें रोकने की कोशिश की और इसके चलते थोड़ी नोक-झोक वाली स्थिति भी पैदा हो गई। पुलिस प्रशासन का व्यवहार काफी रूखा और निंदनीय था उन्होंने कार्यकर्ताओं के हाथों से ओ३म् के ध्वज और नारे लिखी हुई तख्तियां भी छीन ली थी लेकिन युवा कार्यकर्ताओं के गुस्से को देखते हुए फिर पुलिस वालों ने ओम ध्वज ससम्मान लौटा दिए। पुलिस के कठोर व्यवहार से भी जब युवा कार्यकर्त्ताओं का उत्साह नहीं डगमगाया और वे सन्तुलित भाव में जयकारे, जयघोष लगतो रहे तब पुलिस वालों ने अधिकारियों सहित सभी कार्यकर्त्ताओं को गिरफ्तार करने की बात कहीं और इस तरह उपस्थित आर्य नेता, अधिकारी, कार्यकर्त्ता और सदस्यगण सहर्ष गिरफ्तार हो गए।

- शेष पृष्ठ 7 पर

चांदनी चौक में सौन्द्रीयकरण के नाम पर तोड़े गए हनुमान मन्दिर के पुर्निर्माण की मांग को लेकर आर्यसमाज का विरोध प्रदर्शन, जिसमें अन्य संगठन भी सहयोगी बनें

हैदराबाद के हनुमान मन्दिर की रक्षा के लिए बलिदान देने वाले अमर शहीद रामा मांग को शत-शत नमन

आर्यसमाज के इतिहास से ....

आर्य समाज के महान हुतात्मा श्री रामा मांग का जन्म हैदराबाद रियासत के गाँव तावसी पायगा तहसील लोहारा, जि. उस्मानाबाद में एक दलित परिवार में हुआ था। रामा मांग ने आर्यसमाज के विचारों से प्रभावित होकर आर्यसमाज की विचारधारा को अपनाया था। रियासत में आर्य समाज के संघर्ष से प्रभावित होकर हजारों दलितों ने आर्यसमाज में प्रवेश ले लिया था। इसी तरह आट्टर्गा जि. बीदर के तीन दलित युवक हैदराबाद आर्य सत्याग्रह से प्रेरणा लेकर इस आन्दोलन में शामिल हो गये थे जिनका नाम शंकर एवं अर्जुन यज्ञवंता सोनफुले तथा मेहकर जि. बीदर पांडू आर्य था। ग्राम लावसी में मुस्लिम गुंडों ने हनुमान मंदिर पर हमला करे दिया। धर्मान्ध पठानों ने हनुमान मन्दिर को घेरकर जोर जोर से चिल्लाना शुरू किया और कहने लगे हम इस मन्दिर को तोडते हैं जिसमें दम हो, अपने धर्म का अभिमान हो, वह सामने आये और इस मन्दिर को बचाये, देखें किसमें हिम्मत है? हिन्दू तो शान्ति प्रिय और सहनशील होते हैं। इस घोषणा से डरकर कोई भी मन्दिर बचाने के लिए सामने नहीं आया। मुस्लिम पठानों की चुनौति को दलित युवक रामा ने आगे आकर स्वीकार किया और उनको ललकारते हुए गर्जना की यह रामा है, तुमको खुली चुनौति देता है किसी में हिम्मत है तो मन्दिर को लगाए हाथ। मुसलमानों की दुष्टता से उनका खून खौल उठा। हिन्दु पुजारियों ने छुआछूत के नाम पर उसे कभी मन्दिर में घुसने नहीं दिया था आज वह उसकी रक्षा के लिए सीना तान के खड़ा था। मानो वह अपना सीना चीरकर दिखा रहा हो कि मेरा नाम रामा है और मेरे सीने में हनुमान हैं। मैं एक सच्चा आर्य हूँ मेरे देवता को बचाने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दूँगा, कोई माई का लाल है तो वह सामने आये। वह मंदिर को बचाने के लिए अकेले ही निहत्थे मंदिर के सामने खडा हो गया। मुस्लिम गुण्डों ने निहत्थे रामा पर गोलियाँ चला दी। जख्मी होकर भी वे गुंडो पर झपट पडे और उन्हीं की पिस्तौल छीनकर चार मुस्लिम पठानों को ढेर कर दिया। अपने प्राणों की परवाह न कर मंदिर को नष्ट होने से बचा लिया। वे बेहोश हो कर मंदिर के सामने गिर पडे, उन्हें वुलजापुर के अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उन्हें बचाया न जा सका और उनके प्राण पखेरू उड़ गये। 1938 में उन्हें हौलात्म्य प्राप्त हुआ। बाद में हिन्दू आर्यों पर कत्ल का झूठा केस निजाम पुलिस ने चलाया।

- साभार -
हैदराबाद का रक्त रंजित इतिहास

सम्पादकीय

पाकिस्तान में हिन्दू मन्दिर तोड़ने और आगजनी का मामला

पाकिस्तान में शिक्षा के नाम पर नफरत

भारत में मुस्लिम आक्रान्ताओं की मजारों पर चादर चढाई जा रही है और पाकिस्तान में मंदिरों से लेकर हिन्दू संतों की समाधि में तोड़फोड़ की जा रही है। हाल ही में एक बार फिर पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत जिसे केपीके भी कहा जाता है वहां कोहाट के करक जिले में भीड़ द्वारा एक हिंदू मंदिर में तोड़फोड़ की गई है। बड़ी संख्या में शांतिप्रिय समुदाय के लोग आये और समाधि में तोड़फोड़ कर दी। ये समाधि हिंदू संत श्री परम हंस जी महाराज की है साल 1919 में यहीं पर उनकी अंत्येष्टि की गई थी। उनके अनुयायी यहां पूजा-पाठ के लिए हर साल आते रहे थे। साल 1997 में ये सिलसिला उस वक्त रुक गया जब ये मंदिर ढहा दिया गया। इसके बाद हिंदू संत श्री परम हंस जी महाराज के अनुयायियों ने मंदिर के पुनर्निर्माण की कोशिशें शुरू कीं। हिंदू समुदाय के लोगों का आरोप था कि एक स्थानीय मौलवी ने सरकारी ट्रस्ट की प्रोपर्टी होने के बावजूद इस पर कब्जा कर लिया था।

खैर इस मामले भी पाकिस्तान सरकार चेक एंड बेलेंस वाले मोड़ में आई और मुंह उठाकर निंदा कर दी जैसे पहले से ही तय हो कि तुम तोड़ दो हम निंदा कर देंगे। साथ में दो-चार मौलाना और मौलवी भी पकड़ लेंगे जो ये कह देंगे कि यह मजहब ए इस्लाम के खिलाफ है। असल में यह सब क्यों होता है क्या कारण है कि इस्लाम में किसी दूसरे मत सम्प्रदाय के धर्म स्थल से लेकर उपासना तक सब कुछ गिद्ध नजर से देखा जाता है? इसमें पहली तो है आसमानी किताब दूसरा इन इस्लामिक देशों का पाठ्यक्रम जो वहां बच्चों के दिमाग में ठूसा जाता है। असल में पाकिस्तान के स्कूलों में हिंदुओं, यहूदियों और बलोचों शिया अह्मदियाँ के प्रति घृणा पैदा करने वाले पाठ बच्चों को पढ़ाए जाते हैं। इससे अल्पसंख्यकों के प्रति पाकिस्तान में माहौल तैयार होता है। ये पाठ केवल मदरसों में ही नहीं बल्कि वहां की सेना द्वारा चलाए जा रहे उच्च स्तरीय कैडेट कॉलेज में बच्चों को जो पहला पाठ पढ़ाए जा रहे हैं, उसमें बताया गया है कि हिंदू काफिर होते हैं और यहूदी इस्लाम के दुश्मन होते हैं। इसलिए दोनों समुदाय के लोग मौत के हकदार होते हैं। इसमें सेना की वर्दी पहनने वाले शिक्षक बच्चों को बताते हैं कि हमें बंदूकों और बमों से प्यार करना चाहिए- उन्हें इज्जत देनी चाहिए, क्योंकि वे हिंदू माताओं को मारने के काम आते हैं। ये हिंदू औरतें ही हिंदू बच्चों को जन्म देती हैं। यह बात हम नहीं बल्कि पिछले दिनों बलोचों के अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे मुनीर मेंगल ने संयुक्त राष्ट्र के जिनेवा स्थित कार्यालय में कही थी।

अब हम ठहरे धर्मनिरपेक्ष देश हमारे बच्चों को तो पढाया जाता है कि सब धर्म बराबर होते हैं अकबर महान था, औरंगजेब उदार शाशक था जहांगीर ने सडक बनवाई किसी ने कुआँ खोदा किसी ने पहाड़। सिर्फ यही नहीं हम तो इतने धर्मनिरपेक्ष है कि उत्तरप्रदेश के सरकारी स्कूलों में जब 'ग' से गणेश पढाया जाता था तो धर्मनिरपेक्षता खतरे में आ गयी थी। इसके बाद 'ग' गधा और गमला किया गया मतलब गणेश जी साम्प्रदायिक थे गधा और गमला धर्मनिरपेक्ष बन गये।

लेकिन पाकिस्तान में ऐसा कुछ नहीं है उनके लिए हिन्दू अधम होते है पाकिस्तान की एक लेखिका है जुनैरा साकिब इस लेखिका ने पाकिस्तान में पनपते आतंक और हिन्दुओं, सिखों अहमदियों और बलूचों पर बढ़ते हमले जानने के लिए अनेकों सरकारी स्कूलों का दौरा किया वहां के पाठ्यक्रम देखे।

एक पुस्तक मुतालिआ-ए-पाकिस्तान किताब का हवाला देते हुए बताया कि उक्त किताब हिन्दू और यहूदी विरोध से भरी पड़ी है इसके अलावा जुनैरा ने देखा स्कूल में जब टीचर ने बच्चों से पूछा हम सब कौन हैं? बच्चे बोलते हैं मुसलमान। तभी एक बच्चा खड़ा होकर कहता है 'लेकिन टीचर मैं तो मुसलमान नहीं, मैं तो..' वो यानि अपने शब्द पूरे भी नहीं कर पाया था कि टीचर बोल उठा 'चुप! भंगी कहीं का, चुप रह! यहां रहना है तो चुप रह।' टीचर फिर अगला सवाल पूछता है हिन्दू कौन है? बच्चे बोलते हैं हिंदू इंडिया में रहने वाले रजील लोग हैं। ये हमारे दुश्मन हैं। आपको बता दे रजील का हिंदी अर्थ होता है अधम, कमीना, नीच। अब इस सवाल पर वहां पढने वाला एक बच्चा बोल उठा लेकिन टीचर मैं तो हिन्दू हूं। मैं तो पाकिस्तानी हूं, तो टीचर बोलता है हिंदू हो तो हिंदुस्तान जाओ ना!!

इसके बाद जुनैरा साकिब एक दूसरे स्कूल में गयी। वहां पढाया जा रहा था यहाँ टीचर पूछता है 'बच्चो सबसे अच्छा मजहब कौन सा है?' बच्चें बोलते हैं 'सब से अच्छा मजहब इस्लाम है।' एक बच्चा चुप रहा टीचर ने उससे पूछा क्यूं बे तू नहीं बोल रहा है, बच्चा बोला जी मेरा मजहब तो कुछ और है। अब टीचर की आँखों में मानो खून उतर आया उसने कहा इस्लामी जम्हूरिया पाकिस्तान है। ये इस्लामी जम्हूरिया, समझा क्या? सब से अच्छा मजहब इस्लाम, बाकी सब बकवास। और आगे कहता है कि दो कौमी नजरिया ये है कि हिंदू और मुसलमान दो अलग अलग कौमें हैं और ये मिल कर नहीं रह सकती। इसीलिए हमने पाकिस्तान बनाया।

इसके बाद जुनैरा साकिब ने एक और स्कूल का दौरा किया यहाँ मास्टर पूछ रहा था कि जिहाद क्या होता है तो बच्चें बोलते है जिहाद अल्लाह की राह में काफिरों के खिलाफ जंग को कहते हैं। टीचर कहता है शाबास अच्छा अब ये बताओ काफिर कौन होता है? बच्चे बोलते हैं जो मुसलमान न हो। टीचर खुश होकर कहता है बहुत बढ़िया पाकिस्तानी हिंदू, ईसाई, यहूदी, कादियानी, शिया, सब काफिर हैं उन के खिलाफ

.....हम तो इतने धर्मनिरपेक्ष है कि उत्तरप्रदेश के सरकारी स्कूलों में जब 'ग' से गणेश पढाया जाता था तो धर्मनिरपेक्षता खतरे में आ गयी थी। इसके बाद 'ग' गधा और गमला किया गया मतलब गणेश जी साम्प्रदायिक थे गधा और गमला धर्मनिरपेक्ष बन गये।..... लेकिन पाकिस्तान में ऐसा कुछ नहीं है .....स्कूल में जब टीचर ने बच्चों से पूछा हम सब कौन हैं? बच्चे बोलते हैं मुसलमान। तभी एक बच्चा खड़ा होकर कहता है 'लेकिन टीचर मैं तो मुसलमान नहीं, मैं तो..' वो यानि अपने शब्द पूरे भी नहीं कर पाया था कि टीचर बोल उठा 'चुप! भंगी कहीं का, चुप रह! यहां रहना है तो चुप रह।' टीचर फिर अगला सवाल पूछता है हिन्दू कौन है? बच्चे बोलते हैं हिंदू इंडिया में रहने वाले रजील लोग हैं। ये हमारे दुश्मन हैं। आपको बता दे रजील का हिंदी अर्थ होता है अधम, कमीना, नीच। अब इस सवाल पर वहां पढने वाला एक बच्चा बोल उठा लेकिन टीचर मैं तो हिन्दू हूं। मैं तो पाकिस्तानी हूं, तो टीचर बोलता है हिंदू हो तो हिंदुस्तान जाओ ना!! .....

जिहाद हमारा फर्ज है।

ये केवल एक जुनैरा साकिब की बात नहीं है पिछले कुछ समय पहले पाकिस्तान की कायदे आजम यूनिवर्सिटी के पूर्व प्रोफेसर परवेज हुदबोय तो इस मुद्दे को टीवी पर लेकर बोले थे, खुलकर कहा था कि पाकिस्तान में विज्ञान या अन्य विषयों पर अक्ल का प्रयोग करना जुर्म है। यहाँ कालिजों में प्रोफेसर को जब रखा जाता है यदि वो नमाज पढना जानता हो उसके बाद उसका मजहब और जाति देखी जाती है। भौतिक हो या रसायन विज्ञान। हर जगह इस्लामिक शिक्षा इस कदर घुसेड़ दी गयी है कि कोई बच्चा ना चाहते हुए भी उसका सामना इस्लामिक शिक्षा से हुए बगैर नहीं रह सकता। वो आगे लिखते हैं कि पाकिस्तान की दसवीं जमात की फिजिक्स की किताबों में इस कदर बिना मतलब के सवाल भर रखे हैं कि पता ही नहीं चलता ये भोतिक विज्ञान है या कोई रूहानी किताब? जैसे दसवीं कक्षा की किताबों में लिखा है कि दोखज का क्षेत्रफल कितना है? नमाज के शबाब की गणना यानि कि केल्कुलेट कैसे करें? यही नहीं नोवीं कक्षा की फिजिक्स की किताब में पूछा है कि जिन और शैतान का वजूद क्या है, क्या इनसे बिजली पैदा की जा सकती है? दसवीं जमात की बायोलोजी की किताब में लिखा है कि जब वसल्लम साहब पर बही नाजिल हुई तो उसे जन्नत के मुताबिक क्या कहा गया? किताब में आगे एक प्रश्न पूछा गया कि इस्लामी तामील हासिल करना मर्दों का एक फर्ज एक बुनयादी उसूल है, सही या गलत? ऐसी न जाने कितनी रूहानी बातों से पाकिस्तान के पाठ्यक्रम भरे पड़े हैं।

बात यही खत्म नहीं होती पाकिस्तान के पंजाब टेक्स्ट बोर्ड में भी इसी तरह की नफरत फैलाने वाली शिक्षा हैं। मसलन हर एक अध्याय में हिन्दू व अन्य धर्म पर कटाक्ष लिखा है। परवेज आगे पूछते हैं पाकिस्तान का बच्चा इन पुस्तकों को पढ़कर क्या बनेगा, कोई बता सकता है? अपनी मजहबी सनक के कारण पाकिस्तान के हुक्मरान अपने बच्चों अपने देश के भविष्य को अंधकार में भेज रहे है, अंधकार से निकले ये मजहबी लोग मंदिर, चर्च और गुरुद्वारे तोड़ रहे हैं। - ***सम्पादक***

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

ज्ञानविज्ञानानामुत्सभूता वेदाः

- डॉ. जितेन्द्र कुमारः

गतांक से आगे -

नौकाविमानविद्या : वेदे नौकाविमान सन्दर्भे अनेके मन्त्राः सन्ति/नौकाये नौ, नावमादि शब्दाः आयान्ति। विमानपदं स्वधात्वर्थे केषुचित् स्थलेषु प्रयुज्यते। वि+अर्थात् खगा इव गतिमानेन स्थानात् स्थानं लोकाल्लोकं व्योम्नि उड्डीयमानं यानं स्यात् तत् विमानमित्यभिधीयते। पालार्थाय ऋग्वेदे शब्दो वर्त्तते पतत्रिः। न केवलं नौकाया उल्लेख अपितु जलयानानां वर्णनमपि समुपलभ्यते। ऋग्वेदे बृहदाकारभाररथानां विषये संकेतः प्राप्यते। हे शिल्पिन्! तव समीपे समुद्रतठेषु स्थिताः बृहदाकाराः भारयुताः रथाः सन्ति। एतानि सर्वाणि साधनानि ज्ञानानि च युष्मभ्यं प्राप्यन्ते। अस्य मन्त्रस्य भावार्थं स्वामिदयानन्दसरस्वती वदति - "कश्चिदपि मनुष्यः अग्निजलादिभिः गमनागमनयानैः बिना पृथिवीसमुद्रान्तरिक्षेषु सुखेन गमनागमने समर्थः न भवति। अनेनैव प्रकारेण अन्यत्रापि निगदितम् - हे प्रजापालक! याः आकर्षणयुक्ताः देदीप्यमानाः भवन्नौकाः समुद्रे अन्तरिक्षे वा, ताभिः भवान् सूर्यस्थाने, क्षेत्रे प्राप्नोति। तव कमनीयं ऐश्वर्यं प्रजाः स्तुवन्ति। दयानन्दः अस्य मन्त्रस्य भाष्ये भणति - यो मनुष्यः सुदृढाः नौ भूविमानानि च भूम्यन्तरिक्षयोः गमनयानानि निर्माति तैश्च देशदेशान्तरं गत्वा आगत्य च निजेच्छां पूरयति स एव सूर्यमिव द्योतमाना कीर्तियुक्ताः भवन्ति। ऋग्वेदः वदति यत् - यः आकाशे उत्पतमानान् खगान् जानीते। असौ सामुद्राकाशीय नौकाः विमानानि विजानाति। अन्यस्मिन् मन्त्रेऽपि भणितम् - अप्रतिरयं विमानं मूर्ध्नि अन्यत् चक्रं यदन्येभ्यः चक्रेभ्यः पृथक् वर्त्तते - भूचक्रेभ्यः पृथक् विद्यते यं द्वौ अश्विनौ नियन्त्रयतः। यो "द्यां परि ईयते" खे परि भ्रमति। एवंविधैः बहुशः यानविमानरथ प्रभृतीनां वर्णनं सुव्यक्तम्।

यज्ञविज्ञानम् : अग्निहोत्रमात्रं नास्ति यज्ञः। अस्यां सृष्टौ सततं यज्ञः प्रचरति। देवयज्ञस्तु सृष्टिप्रक्रियां प्रतिनिदधाति। यज्ञोऽयं दानं शिक्षयति। "यज्" धातौ 'हु' धातौ च दानभावः सन्निहितो वर्त्तते। कालिदासो भाषते - **"आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव"।** यजनीयात् पूजनीयात् परमेश्वरात् सृष्टिरुपद्यत इति वेदे। यज्ञः प्रजापतिः। प्रजापतिः यज्ञमतन्वत। ऋग्वेदः वाक्यमिदं पुष्णाति। यजुर्वेदसंहितायामपि पश्यामः - देवाः यज्ञेन यज्ञमयजन्त। भगवद्गीता उपदिशति - **"यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः"**। यज्ञशेषं परान् वितीर्य योऽश्नुते असौ सर्वेभ्यः पापेभ्यः मुच्यते इति भावः। सृष्टेः यज्ञः कथं चलति इति तथ्यं भगवती गीता सम्यक् निरुपयति।

अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्या दन्नसम्भवः। यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञकर्मसमुद्भवः।।गीता 3/14

कालिदासोऽपि इमं भावं निगृह्य रघुवंशे भणति -

"दुदोह गां स यज्ञाय सस्याय मघवा दिवम्। संपद्विनिमयेनोभौ दधतुर्भुवन द्वयम्"।। रघुवंश 1/26

महीपालः पृथिव्यां यज्ञं वितनुते इन्द्रश्च द्युलोके यज्ञं विदधाति। मन्ये द्वयोः स्वसंपद्विनिमयेन यज्ञः प्रचलति। परस्परं अन्योन्यलोकं बिभर्त्ति। गीताऽपि निर्दिशति - **"परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ"।** अद्यतनीये युगे विषमे पर्यावरणीये समस्याप्रधानतमे काले अन्येभ्य उपायेभ्योऽतिरिक्तं यज्ञः अन्यतमः प्रशस्यतमश्चोपायो वर्त्तते। या आहुतिः यज्ञे आधीयते सा अग्निमाध्यमेन सूक्ष्मरीत्या। अस्माकं पर्यावरणं सर्वतोऽधिकं वेगेन पुनाति। अग्नौ सा शक्तिरन्तर्निहिता वर्त्तते यया सर्वस्य, परिवेशस्य, कुटुम्बस्य, समाजस्य, देशस्य शोधनं परिष्करणं च भवति। परन्तु अस्माभिः यज्ञस्तु विधातव्यः। बिना कार्यनिष्पादनेन यज्ञोऽपि न भवितुमर्हति। अतः प्रकृतौ तु यज्ञः अनवरतं चलति, अस्माभिरेव स यज्ञः निरुद्धः। यज्ञं बिना सर्वाः समस्याः नितरां एधन्ते। अत एव यज्ञविज्ञानमवगत्य यज्ञः करणीयः समस्याग्रस्ताः मा भूम इत्येदर्थम्।

योगविज्ञानम् : इह विज्ञानपदस्यार्थः विशिष्टमाध्यात्मिकं मनोनियन्त्रात्मकं ज्ञानं विज्ञानमुच्यते। अद्यत्वे युगे योगशब्दः बहुप्रसिद्धिङ्गतः। परन्तु अस्य शब्दस्य शरीराङ्गप्रत्येङ्गभ्यः सुचारुसंचालनाय व्यायामप्राणायामाय अतिशयः प्रयोगः क्रियते। ऋग्वेदे समागच्छति यत् विद्वद्भिः योगिभिः विप्रैश्च निजमनः उपासनाकाले तस्मिन्नेव परमात्मनि योजयितव्यः। असौ परमेश्वरः कृत्स्नं जगत् विदधौ। मनुष्यैः स एवं सर्वव्यापकः प्रभुः नित्यं नितरामुपासनीयः। यजुर्वेदोऽपि एककण्ठय्मुद्घोषयति अत्र। योगकर्त्तारो मनुष्याः ब्रह्मज्ञानाय प्रथमं मनः ब्रह्मणि नियुञ्जते। तदा सवितृरूप ईश्वरः धियं स्वकृपया निजस्वरूपे युड्.क्ते। वाजसनेयिसंहितायाम् एकस्मिन् स्थले सम्यगुल्लेखो वर्त्तते - पौनः पुन्येन योगाभ्यासिनो जनाः स्वमनोबलं मित्रभावं च परस्परं संवर्धयन्तो निजरक्षायै परमेश्वरं चेतसा ध्यायन्ति। इमानेव भावान् संगृह्य महर्षिपाणिनिः योगपदे द्वौ धातू **"युजिर् योगे, युज् समाधौ"** चाह। महर्षिः पतञ्जलिरपि योगशास्त्रे **"योगश्चित्तवृत्ति निरोधः"** सूत्रं प्रणिनाय। योगदर्शनस्य प्रथमसूत्रस्य **"अथ योगानुशासनम्"** भाष्ये मुनिः व्यासः **"योगः समाधिः"** इत्युदीर्य **"युजिर् योगे"** धातुम् अपसृत्य **"युज् समाधौ"** इति धातुं प्रमुखतोऽङ्गचकार। अतः चित्तवृत्तिनिरोघ एव योग इति निश्चप्रचं वक्तुं शक्नुमो वयम्। योगशास्त्रस्य तृतीये सूत्रे चित्तवृत्तिनिरोघस्य प्रतिफलं प्राप्यते। **"तदा द्रुष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्"** चित्तवृत्तिनिरोद्धे सति परमात्मनः स्वरूपे स्थितिं लभते उपासकस्य मनः। अत एव योगदर्शने वेदे च आत्मनः परमात्मनि ध्यानसमये मेलनं योगनाम्ना अभिधीयते। किन्तु अद्यतनीये संस्मरे बाह्यशरीरावयवेभ्यः स्वास्थ्यलाभायैव योगशब्दस्य प्रचुरतरो व्यवहारो दरीदृश्यते। अस्मात् कारणात् ऋषिप्रोक्तः सोऽर्थः विलुप्त इव प्रतिभाति। योगस्य समाधेरर्थः अपकर्षतां गतः। स्वस्मादर्थात् च्युतः भ्रष्टः। गीतायामपि **"समत्वं योगः"** इत्युक्तम्। सुखदुःख लाभालाभ जयपराजय प्रभृतीनां गुणावगुणानां साम्यावाप्तिं बिना मनः सयंमस्तथाचरणं च कथं सम्भवेत्। अतः चित्तवृत्तिनिरोधेनैव, योगस्यार्थः व्यवहारे, समाजे, परिवारे, देशे च सर्वत्र अन्वर्थतां याति।

वेदेषु खलु बहव्यः विद्याः प्राप्यन्ते। परं तासु विद्यासु वयं कथं ज्ञानं वर्धामहे चिन्तनीयोऽयं विषयः। यतो हि आधुनिकवैज्ञानिकयुगे यदा केचन आविष्काराः अस्माकं समक्षं समायान्ति तदा वयमपि वैदिकाः कथयामः तथ्यमिदं एभिः पदैः प्रकारैर्वा वेदेष्वपि अवाप्यतेति। कथन्किमपि वेदात् निस्सार्य समाजे उपस्यातुं शक्नुमः। मन्ये, प्रयोगशालायाः व्याजेन अर्थाभावेन विज्ञानविषयाभावेन अपसरामः। अत्र एको दोषोऽपि प्रतिभाति यत् वयं बाह्यविज्ञानविषयकान् चमत्कारान् वीक्ष्य वेदे तेषां वर्णनं अन्वेषयामः। नैषा उचितरीतिः। यतो हि नास्ति एतदावश्यकं यत् वैज्ञानिकाः आविष्कुर्वन्ति तत् सर्वं वेदे स्यात् परन्तु केषाञ्चन आविष्कारणां शब्दसाम्यानि अर्थसाम्यानि च लब्धुं शक्यते तानि विलोक्य न वक्तव्यं यत् एतदेव तद् वस्तु वर्त्तते। परिवर्त्तनं विज्ञानस्योत्तरोत्तरा मूर्ध्वा गतिं बोधयति तत्र तु एषा स्थितिः विकासमाना शोभना, उपयुक्ता च वर्त्तते किन्तु वेदस्य परिष्ठितिः नास्ति एतादृशी। अतः अस्माभिः वेदे विज्ञानं नान्वेषणीयम् अपितु वेदस्य विज्ञानत्वं गवेषणीयम्। अत्र वेदविज्ञानपदे षष्टीतत्पुरुषसमासो विधातव्यः। न हि सप्तमी तत्पुरुषः। वेदविज्ञानशब्देनैव भ्रान्तिः प्रभवति सा अपाकरणीया। षष्ठी तत्पुरुष समासेन। यदा वयं षष्ठीतत्पुरुषसमा सेनार्थ मव गमिष्यामः तदा वेदोक्तं पदार्थविज्ञानं विज्ञातुं शक्नुमः। तदा एवमपि भवितुमर्हति यत् इतोऽतिरिक्तम् अधिकं वा विज्ञानं प्राप्स्यामः। यथा - एकस्मिन् मन्त्रांशे **"सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा"** इति आयाति। अस्यार्थः अस्य कृत्स्नस्य विश्वश्रुतस्य लोकस्य स्थावरजङ्गमस्य चेतनाचेतनयोः आत्मतत्त्वभूतं यदि कश्चिद्वर्त्तते असौ सूर्य एव। यथा अस्माकं शरीरे आत्मनः स्थानं सर्वतः ऊर्ध्वं विद्यते अनेन बिना जीवनं नास्ति तथैव संसारस्य आत्मा सूर्यो वर्त्तते। अस्माकं जीवितसर्वस्वं सूर्य एव। अत्र वेदः सूर्यम् आत्मेति विज्ञाप्य ऊर्जाशक्तेः अनवरतस्रोतः, प्रकाशस्य माहात्म्य, ऊर्ध्वारोहणं, नियम पालनं, चरैवैति-चरैवैति इत्युपदेशः सततं सर्व भाषते सहजभावेन। लोके वयं विलोकयामः सूर्येण बिना अस्माकं जीवनं न कदापि केनापि प्रकारेण सम्भवितुमर्हति। अयं वेदस्य आत्मस्थानीयो भूत्वा सूर्यः स्वधुरि चङ्क्रमते। पृथिवी च सूर्यस्य चक्रार पङ्क्तिरिव परितः परिभ्रमति नितराम्। नातिक्रमते न च व्यक्तिक्रमते। चन्द्रोऽपि सूर्यस्य उष्णप्रकाशं नीत्वा आह्वदकं शीतलं सोमवद्रसं अस्मासु विकीर्य ह्लादते। 'आत्मा' इति शब्दः सूर्यस्य सर्वतत्वात्मत्वं प्रतिपादयति। सेयं सरला, सहजा, हृद्या, अनवद्या, ग्राह्या, श्लाघनीया च वैदिक सरणिः। अस्माभिः वेदे आधुनिका आविष्कारा नान्वेष्टव्या अपितु विज्ञानस्य मूलतत्त्वानि द्रष्टव्यानि। शब्दान्तरेण कथयितुं शक्यते यत् वेदे कीदृशी वैज्ञानिकी दृष्टिः प्राप्यते इति अस्माकं विषयो भवेत्।

प्रेरक प्रसंग

जब तक आर्यसमाज का मन्दिर नहीं बनता

तुम्हें याद हो कि न याद हो

जिला बिजनौर के नगीना ग्राम से सब आर्य भाई परिचित हैं। यहाँ के एक ब्राह्मणकुल में जन्मा एक युवक 1908 ई. में अकेले ही भारतभर की तीर्थ-यात्रा पर चल पड़ा। रामेश्वरम् से लौटते हुए मदुराई नगर पहुँचा। यहाँ मीनाक्षीपुरम् का प्रसिद्ध मन्दिर है। इस पौराणिक युवक ने क्या देखा कि यहाँ मन्दिर के निकट चौक-चौराहों में ईसाई पादरी वा मुसलमान मौलवी सोत्साह प्रचार में लगे हैं। हिन्दुओं की भीड़ इन्हें सुनती है। ये हिन्दुओं की मान्यताओं का खण्डन करते हैं। यदा-कदा हिन्दू विधर्मी बनते रहते हैं।

यह दृश्य देखकर इसका हृदय हिल गया। यह युवक वहीं डट गया। वैद्यक का उसे ज्ञान था। ओषधियाँ देकर निर्वाह करने लगा। धर्मप्रचार में जुट गया। तमिल भाषा भी सीखी। विधर्मियों का खण्डन करने लगा, परन्तु धर्मरक्षा के कार्य में तनिक भी सफलता न मिली। अब क्या किया जाए? बिजनौर जिला से गया था, अतः ऋषि के नाम व काम से परिचित था। अब सत्यार्थप्रकाश मँगवाया। स्वामी दर्शनानन्द, पण्डित लेखराम आदि का साहित्य पढ़ा और आर्यसमाज का झण्डा तमिलनाडू में गाड़ दिया। वहीं एक दलित वर्ग की देवी से विवाह करके वैदिक धर्म की सेवा में जुटा रहा। 1914 ई. में लाहौर से एक आर्य महाशय हरभगवानजी दक्षिण भारत की यात्रा पर गये। उनके कार्य को देखकर स्वामी श्रद्धानन्द व महात्मा हंसराजजी को इनका परिचय दिया। यह युवक कुछ समय सार्वदेशिक सभा की ओर से वहाँ कार्य करता रहा। स्वामी श्रद्धानन्दजी के बलिदान के पश्चात् उनकी सहायता उक्त सभा ने बन्द कर दी। सात-आठ वर्ष तक प्रादेशिक सभा ने सहयोग दिया।

इस वीर पुरुष ने स्वामी दर्शनानन्दजी व उपाध्यायजी के ट्रैक्ट अनुवादित किये। अपने पैसे से तमिल में 35-40 ट्रैक्ट छपवाये। हिन्दी पाठशालाएँ खोलीं। धर्मार्थ औषधालय चलाया। आर्यसमाज के नियमित सत्संग वहाँ पर होते रहे। विशेष उत्सवों पर सहस्त्रों की उपस्थिति होती थी।

अक्टूबर 1937 में आप उक्त जयन्ती देखने अपने प्रदेश में आये। नगीना भी गये। वहीं विशूचिका रोग के कारण उनका निधन हो गया। यह मई 1938 ई. की दुःखद घटना है। क्या आप जानते हैं कि इस साहसी आर्यपुरुष का क्या नाम था? यह एम. जी. शर्मा के नाम से विख्यात थे। आइए, इनके जीवन से कुछ प्रेरणा ग्रहण करें।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

स्वास्थ्य रक्षा

नाड़ी विज्ञान

.....चिकित्सा जगत में नाड़ी विज्ञान का अनुभव होना अपने आप में एक अनुपम उपलब्धि आज भी मानी जाती है। आधुनिक परिवेश में जो स्वास्थ्य परीक्षण के लिए एक्सरे, अल्ट्रासाउण्ड, रक्त जांच, इतयादि अनेकानेक परीक्षणों के बाद चिकित्सक किसी निर्णय पर पहुंचता है, प्राचीन काल में नाड़ी विज्ञान के अनुभव से तुरंत जान लेते थे कि किस कारण से रोगी कष्ट में है और रोगी को उपचार के लिए औषध के साथ-साथ परहेज तथा सावधानी बरतने की हिदायत दी जाती थी। इससे रोगी का समय और पैसा दोनों की पूरी बचत होती थी। लेकिन आजकल के समय में चिकित्सा जगत ने आधुनिक तकनीकी क्षेत्र में उन्नति के साथ-साथ चिकित्सा की महान गरिमा को खोया है। आर्य संदेश के इस अंक में प्रस्तुत है नाड़ी विज्ञान विषय पर आधारित लेख... सम्पादक

स्वस्थ नाड़ी का लक्षण - स्वस्थ मनुष्य की निर्दोष नाड़ी केंचुए तथा सर्प की तरह स्थिर एवं धीमी गति से चलती है और बलवान होती है। अर्थात् स्वस्थ एवं निरोग व्यक्ति की नाड़ी स्थिर एवं सबल होती है।

स्वस्थ एवं रोग रहित व्यक्ति की नाड़ी प्रात:काल स्थिर, चिकनी एवं मन्द गति से चलती है। दोपहर को उष्णता से युक्त तथा सायंकाल को चंचल गति से चलती है। इस प्रकार की गति उन व्यक्तियों की होती हैं जो अधिक दिनों से निरोग होते हैं।

प्रात:काल कफ का प्रकोप, दोपहर को पित्त का प्रकोप तथा सायंकाल वात का प्रकोप सामान्यत: होता है। इसी के आधार पर प्रात:काल मन्दगामिनी स्निग्ध नाड़ी कफ की होती है। मध्याह्न में चपल गामिनी उष्ण नाड़ी पित्त की होती है तथा सायंकाल वक्रगामिनी तथा तेज नाड़ी वात की होती है। यह लक्षण तब होता है जब व्यक्ति अधिक दिनों से बीमार नहीं होता है।

रात्रि में स्वभाव से ही दिन की अपेक्षा उष्णता कम होती है तथा इन्द्रियों के विश्रान्त होने से नाड़ी की गति उत्तेजना रहित होती है। दिन में समय भेद से स्निग्ध, उष्ण तथा दौड़ती हुई नाड़ी चलती है। रात्रि में प्रकृतिस्थ होती है। इस प्रकार की गति वाली नाड़ी स्वाभाविक होती है। ऐसा विद्वान चिकित्सक समझे।

रोग मुक्त नाड़ी के लक्षण - रोग मुक्त होने पर या आरोग्यावस्था में जब नाड़ी साफ-साफ क्रम से मालूम पड़े, दोषों के प्रकोप न होने से निर्मल हो तथा वात, पित्त, कफ की नाड़ी अपने स्थान पर अपनी गति के अनुसार स्पन्दन करती हो, न चंचल हो औन न मन्द हो-ये सब नाड़ियों के शुभ लक्षण हैं अर्थात् इस प्रकार की नाड़ी चले तो व्यक्ति को स्वस्थ समझना चाहिए।

सुखसाध्या नाड़ी का लक्षण - अपने स्वभाव से ही नाड़ी जिस समय जिस धातु को प्राप्त हो, जैसे प्रात:, मध्याह्न, सायं या भोजन के आदि मध्य पच्यमान काल, पाककाल के बाद, स्वभाव से ही वात, पित्त, कफ का ही प्रावल्य होता है। उसी समय उस धातु की वात के समय वात की गति, पित्त के समय पित्त की गति तथा कफ के समय कफ की गति ठीक हो तो रोगी का रोग सुखसाध्य है ऐसा नाड़ी विज्ञान के विशेषज्ञ समझते हैं। अर्थात् बिना कष्ट के ही आरोग्य प्राप्त करता है।

जिस क्रम से वात, पित्त, कफ का संचय, प्रकोप तथा शान्ति होती है, उसी क्रम में नाड़ी की गति हो शीत, ग्रीष्म, वर्षा, पूर्वाह्न भाग एवं भोजन के समय, पाक होने के समय, जीर्ण होने के बाद, वात, पित्त, कफ का क्रम से प्रकोप होता है। अपने दोष के प्रकुपित होने के काल में ठीक-ठीक उसी की गति को लेकर नाड़ी चले तो रोगी के रोग को सुखसाध्य समझें।

दुष्ट नाड़ी का लक्षण - नाड़ियों का रक्त पूर्ण होकर चलना, तन्तु के समान स्पन्दन का मालूम पड़ना, अपने स्थान पर वात, पित्त, कफादि का अंगूठे के नीचे प्रकोष्ठ पर तर्जनी, मध्यमा एवं अनामिका के नीचे वैषम्य स्पन्दन का प्रतीत होना या स्थान छोड़कर चलना, अधिक तेजी से चलना, प्रकुपित वातादि के लक्षणों से परिपूर्ण रहना, अत्यधिक कठिन मालूम पड़ना, अधिक मन्द चाल से चलना, चिपचिपा प्रतीत होना, कुटिलता के साथ तिरछे चलना ये सब दोष वातादि के द्वारा दूषित सभी नाड़ियों के दुष्ट लक्षण हैं।

- शेष अगले अंक में

बाल बोध

आओ चलें, सफलता की ओर

सफलता का आनंद उन्हें ही मिलता है जो असफलता के सामने कभी घुटने नहीं टेकते, हिम्मत और हौंसले के साथ संघर्ष करते हैं। क्योंकि जीवन में कोई भी हार अन्तिम पराजय नहीं होती, बशर्ते विजय का प्रयास न छोड़ा जाए। सफलता के सदैव दो पक्ष होते हैं। सफलता के लिए पुरुषार्थ करना आवश्यक है, असफलता के लिए नहीं। बुद्धिमान व्यक्ति असम्भव को सम्भव नहीं बनाता लेकिन सम्भावनाओं को उजागर अवश्य करता है।

असफलता से सफलता की ओर कदम बढ़ाने के लिए प्रस्तुत है प्रेरक लेख, स्वयं पढे और अन्यों का पढ़ाएं। - सम्पादक

असफलता सफलताओं का मार्ग तैयार करती है। विचारक वैटसन का कहना है कि जिन्हें सफलता की चाह हो उन्हें असफलता की दर दोगनी कर देनी चाहिए। असफलताओं से मिले अनुभव ही सफल मार्ग के पथप्रदर्शक बन जाते हैं।

इतिहास साक्षी है कि सफलता की कहानियों का आधार असफलता की बड़ी श्रंखला होती है। फिर जो उत्साही लोग इस उपरोक्त तथ्य को जानते हैं वे असफलता से निराश नहीं होते, अपितु उन्हीं असफलताओं से सबक लेते हुए सफलता के रास्ते खोज निकालते हैं। महान वैज्ञानिक थामस एल्वा एडिसन ने जब बल्ब का आविष्कार किया तो सैकड़ों बार असफल हुआ। किसी ने व्यंग्य करते हुए इस वैज्ञानिक को कहा महाशय आप इस अविष्कार में इतनी अधिक बार असफल हुए हैं। उत्तर में एडिसन ने कहा नहीं, असफल नहीं अपितु मैंने सीखा है कि अमुक तरीकों से बल्ब नहीं बनता।

यहां कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं उन विशिष्ट व्यक्तियों के जिन्होंने असफलता से हार नहीं मानी, अपितु जीवन को संघर्ष का ही पर्याय मानकर जूझते रहे और जीवन की बुलन्दियों को छुआ। यह उस व्यक्ति की जीवन्त कथा है जो 21 वर्ष की आयु में व्यापार में असफल हुआ, 26 साल की उम्र में उसकी पत्नी का देहान्त हो गया, 27 साल की उम्र में कांग्रेस का चुनाव हार गया, 45 साल की उम्र में सीनेट का चुनाव हारा, 47 साल की उम्र में उपराष्ट्रपति बनने के प्रयास में नाकामयाब रहा, फिर 49 साल की उम्र में सीनेट चुनाव हार गया और 52 साल की उम्र में अमेरिका का राष्ट्रपति चुना गया।

यह व्यक्ति अब्राहम लिंकन था। इस व्यक्ति ने असफलता को मार्ग की बाधा तो माना पर हार मानकर बैठ नहीं गया और अमेरिका जैसे देश में सर्वोच्च चुना गया।

10 दिसम्बर, 1903 को न्यूयार्क टाइम्स के सम्पादकीय लेख ने राइट ब्रदर्स की समझ पर ही सवालिया निशान लगा दिए थे, ये दोनों भाई एक ऐसी मशीन बनाने की कोशिश कर रहे थे जो हवा से भारी होने पर भी उड़ सके। राइट ब्रदर्स निराश नहीं हुए और इसके एक सप्ताह पश्चात किट्टीहांक में उन्होंने अपनी उड़ान भरी।

65 वर्ष के वृद्ध कर्नल सैंडर्स के पास एक पुरानी कार और सिक्युरिटी से प्राप्त सिर्फ 100 डालर थे। इतने से उन्होंने कुछ व्यापार करने की योजना बनाई, उन्हें मां द्वारा सिखाई गई रेसपी याद थी। उन्होंने एक हजार दरवाजे खटखटाए, तब कहीं जाकर उन्हें पहला खरीददार मिला। प्राय: हम दो अथवा पांच कोशिशों के पश्चात हार मानकर बैठ जाते हैं और मन को सान्त्वना देते हैं कि जितना हमसे हो सकता था हमने किया।

- शेष अगले अंक में

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन एवं ओम प्रेम सुधा दयानन्द आर्य विद्या निकेतन का निरीक्षण

दिनांक 7 जनवरी को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के उप प्रधान श्री विनय आर्य जी एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामंत्री जोगेंद्र खट्टर जी पूर्वोत्तर आसाम में संचालित महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन धनश्री का निरीक्षण करने पहुंचें। यहां उन्होंने छात्रों एवं शिक्षकों के साथ यज्ञ भी किया। इसके उपरान्त वे आसाम में ही कार्बी आंग्लांग जिले स्थित ओम प्रेमसुधा दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, बोकाजान का भी निरीक्षण करने पहुंचे। यहां विद्यार्थियों ने तिलक एवं अंगवस्त्र के साथ उनका स्वागत किया। इस अवसर पर पूर्वोत्तर के संयोजक आचार्य सन्तोष भी उपस्थित रहे।

Veda and The Vedas

Etymologically, the word Veda is derivable from the roots Vid to know, Vid to exist, Vedlri to gain and Vid to think. Thus, knowledge, existence, gain and flawless and comprehensive thinking are conveyed by the word Veda. Couching the same in an appropriate language, it may be said that the Veda is the source of all physical and metaphysical sciences; that the Veda is eternal, existing all the time; that several things are gained or obtained from the Veda; and that the knowledge, acquired from the Veda, when applied to facts and phenomena, confronting us and passing and repassing before us, with intelligent, diligent and tenacious thinking, leads to the discoveries, which are bound to secure a complete conquest of nature and of our inner or real selves, making us happy and prosperous as long as we live and securing for us emancipation from the bondage of birth and death and ultimate enjoyment of the bliss of the realisable presence of and association with the Supreme Ego after passing away from this earthly existence.

This Veda, as the Divine message for one and all, irrespective of class, colour, creed or place, given as a gift to mankind in the beginning of things, supplying all that is essentially needed, consists, as would be shown later, of four parts : Rik, Yajus, Saman and Atharvan, which are respectively called the Rigved, the Yajurved, the Samaved and the Atharvaved, constituting the entire Vedic lore. They remained as oral traditions, passed from father to son, teacher to the taught and Brahma sages to the laity by the words of mouth, and when the art of lettering or writing was discovered by mankind thousands of years from now, they were compiled into four extant Sanhita texts, known respectively as the Rigved Sanhita, the Yajurved Sanhita, the Samaved Sanhita and the Atharvaved Sanhita.

Divine Authorship of the Vedas

The Vedic, postvedic and later Aryans, the traditional repositories or custodians of the Vedic lore and the later Sanhita texts of the Vedas, according to the persistent and harmonious traditions all over from the Himalayas, the southern Himalayan low lands, the Indus (Sindhu)-Ganges (Ganga)-Brahmaputra plain of Aryavart to the extreme south of Bharat, Bharat Varsha or Greater Aryavart, have taken the Vedas as of Divine origin, handed to mankind in the beginning of things at the dawn of human civilisation.

So far as the Vedas are concerned, they speak univocally in the same strain. Some of their pronouncements, may, quite in the fitness of things, be given here:-

(1) "Devasya pashya kavyam mahitwadya mamara sa hyah samana '—Rigved, 10. 55. 5; Samaved, 1.4 (1). 4.3, 2.9 (1). 7.1; Atharvaved, 9. 10. 9 ('Visualise the great composition of the Divinity, which is today the same as yesterday or in the past, and which does not undergo transformation or decay.')

(ii) "Devasya pashya kavyam na mamar na jiryati"— Atharvaved, 10.8.32 ('Behold the composition or poetry of God, which neither comes to an end nor decays")

(iii) 'From that adorable and all-worshippable Divinity came out the Rigved and the Samaved, the Atharvaved appeared from Him and the Yajurved was created from Him' (Rigved, 10.90.9; Yajurved, 31.7)

(iv) 'From Whom did come out the Rigved, from Whom did appear the Yajurved, Whose hair the samaved constitutes, and Whose mouth is the Atharvaved or the Angirasved, that Sustainer be described, Who is certainly the highest of all the sublime' (Atharvaved, 10.7.20) For datails, the author's Veda and Veda-Yajna may be perused, wherein nearly 200 references to the Vedic texts, supporting the same proposition, are noted.

The Postvedic and later literatures - the Brahmanas to the Darshan Shastras take the Vedas as Shabda-Brahma or the Divine Word and accept them to be the ultimate authority on the things contained in them.

At several places in the four Vedic Sanhita texts, the word Brahma denotes the Supreme Being, and at many places therein, this word stands for the Divine Word or the Veda. As a matter of fact, according to the Rigved (10.114.8) — "Yavat brahma vishtitam tavaii vak" ('Howfar is the Supreme Being or Brahma permeated, the same is the position of His Word or the Veda')— it is inevitable to think that the Divinity and the Divine Word (Veda) are not separable from each other, each following the other automatically, both, as if, having the same status in a limitedly relative way for all practical purposes.

Extent Languages, Religious Systems and Ancient Traditions Support the Same

Trough the efforts of Bopp, Grimm and Pott and other leading orientalists and philologists of Europe- an intensive critical examination of all extant languages of Eurasia, earlier, mediaeval and later towards latter half of the 19th century A.C. established that in points of important words, grammatical formations and constructions of sentences, etc., all of them are interrelated and can, definitely, be said to have been derived in some form or other, lineally or collaterally, from one parent language, closely allied to Sanskrit. Later on, they called it, for want of a suitable or proper name, Indo-European or Indo-Germanic. As more facts, later on, came to light, they finally asserted that the original parent language, the ultimate source of all extant languages of the world, was Primary Prakrit (literally the original spoken tongue of the masses), whose literary type is the language of the Veda, in which are composed the four Vedic Sanhita texts. Though resembling its eldest daughter, Snnskrit, it is certainly very much different from the same, and may, for all practical purposes, be called the Vedic language, Vedic Vangmaya or Deva Bhasha, which, in natural development of things, came to be purified, restricted, regularised or shorn of most of irregularities

Grammarian Panini notes them under "Vyatyayo bahulam" (3.1.85), "Bahulam chandasi" (5.2.122), etc., meaning that very many expressions, grammatical constructions, etc., are found in the Vedas, which may be said to be irregular or special Vedic usages, not found in Sanskrit, which is an inprovement on or development from the Vedic language. As a matter of fact, the word Sanskrit means purified, restricted, polished or set to order. Grammarian Patanjali adds many to the list of Panini's.

If, therefore, as pointed out above, all the languages of the world are derived from the language of the Vedas, it stands to reason that the Vedas are, in fact, the sources of all informations in the world and all possessions and activities of mankind, including language.

Rigved (1.84.19) speaks of "Te vachah", Thy speec , Divine speech or Vedic language ; Rigved (1. 10.9) talks of "Me girah", my speech or popular speech; Rigved (1.88 6) states of "Na vani", our speech or popular speeeh; and Rigved, 6.16.16. and Samaved, 1.1(1). 1.7,2.(1) 1.21.1 have two expressions (i) "Te isttha" (Thy speech or the Vedic language) and (ii) "Itara girah" (the other or popular speech). In effect, they go to support the theory of the modern linguists or philologists that the popular original speech of man was primary Prakrit, whose literary type must have been the Vedic language in which the four Vedic Sanhita texts are couched.

This subject may be perused in detail in the author's Divinity and Knowledge and his Aryans and the World Civilisation.

An analytical examination of the present religious systems—Zoroastrianism, Buddhism, Hinduism, Judaism, Christianity and Mohamedanism would also show surprisingly that all of them in their fundamentals owe their origine to Vedicism. If Zoroaster's personality along with all attendant paraphernalia be removed from Zoroastrianism, that of Buddha be taken away from Buddhism, that of Moses be stripped away from Judaism, that of Jesus Christ be set aside from Christianity, and that of Muhammad (Mohamed) be separated from Islam or Mohamedanism, and if Hinduism be shorn of the triad of Brahma, Vishnu and Mahesh and their multifarious activities, whatever, then, is left of Zoroastrianism, Budhism, Jndaism, Christianity, Mohamedanism and Hinduism, it would, practically, be pure and simple Vedicism. In other words, all the fundamentals of the leading religious systems of the world.today are the same as the imperical tenets of Vedicism, which may be said to be the mother of all of them. The same thing, to put in another way, would amount to saying that strictly speaking the religion is one, called Vedicism, ushered in to mankind at the dawn of human civilisation, but the religious systems, comprising imperical fundamental principles and the local and time-suited innovations, forming the details of religious and social thoughts, are as many as six, all of which owe their origine to unallied Vedicism.

Then again, the Encyclopaedia of Religion and Ethics, The Encyclopaedia Britannica, the Encyclopaedia Indica, the Asiatic Society Research, Historians History of the World, Hermes and Plato, Ram and Moses (Edward Schure, translated by Rothwell, London), Krishna and Orpheas, Childhood of Religions (Edward Clodd), Rigvedic India (A. C. Gupta) and certain other standard books tell us in an unmistakable way that various ancient customs, manners and traditions all over the world owe their origin to those of the Vedic and the postvedic Aryans.

These are the threefold proofs, if proofs be needed, to establish the proposition that the Vedas are in fact the origin of all human speculations and institutions, and certainly the ancientmost literature in the possession of mankind.

Further, the Zendavesta, the ancient Buddhist literature, the Old and the New Testaments, the Kuran and the Indian Purans and other sacred books of yore invariably point out to the original source of all of them in some form or other, which cannot, to all intents ard purposes, be anything other than the Vedas. The Indian literatures of all kinds refer to the Vedas by name, and the Semitic literatures refer to them by definite implication. Here, the author cannot help quoting from the Kuran (13.38 -39), which states : 'For each period is a Book (revealed). God doth blot out or confirm what He pleaseth; With Him is the Mother of the Book.

विश्व का पहला वेद आधारित लाइव टीवी चैनल

ARYA SANDESH TV एप को डाउनलोड करें।

एप्प डाउनलोड करने के लिए लिंक पर जाएं - https://bit.ly/2OWyt2x

वैदिक धर्म के सन्देश को विश्व में प्रसारित करने के लिए यह सन्देश अधिक से अधिक लोगों को फॉरवर्ड करें एवं एप्प डाउनलोड कराएं।

Makers of the Arya Samaj : Pt. Guru Dutt ji

Continue From Last issue

Every word that he spoke came from his heart. It appeared as if he had himself felt the truth of what he said and himselfhad faith in whatever he preached. It has seldom been our lot to listen to such an eloquent lecture. When he referred to the life of Swami Oayanand many people began to cry. Last of all, he asked people to support the Dayanand Anglo Vedic College. It was the truest monument to the memory of Swami Dayanand."

Pt. Guru Outt was invited to Ajmer where he delivered two lectures. One of his lectures was on truth, In it he asked people to practise truthfulness in word, deed and thought. Panditji himselfwas an honest and straightforward man. He was against all forms offal sehood. His lecture was well received.

Another lecture was delivered at Amritsar. In it he asked people to have deep faith in the Vedas. He said that it was no use merely professing faith in them. We should read them and practise what they teach.

In 1888 the Dayanand Anglo-Vedic High School, Lahore, stood first in the Entrance Examination in the whole province. Some people expressed a desire that it should be raised to the standard of a college. Pt. Guru Outt was one ofthese. The suggestion was opposed by some very influential persons. At last a meeting of the D.A.V. College Managing Committee was held at which it was decided to open college classes. Panditji then promised to pay ten rupees a month for one year to the college. He also acted as Professor of Mathematics and Physics for sometime.

Shortly after wards Pt. Guru Dutt gave a series oflectures on the Arya Samaj. The object ofthese lectures was to show that European scholars had not understood the Vedas rightly. He quoted passages from their translations to show that they had made many mistakes. He also learnt at that time how to chant the mantras. When he went to attend the anniversary of Pes ha war Arya Samaj he gave some specimens of it. This pleased the audience very much. In his lectures he said that we should understand the real purpose oflife. We should not waste our life running after money and fame.

.....At one time some learned sannyasis came under the influence of Panditji and became zealous preachers of the Arya Samaj. One of these sannyasis was Swami Achyuta Nand. This learned sanyasi was a leader of a sect of the Vedantists. He had a large number of respectable and learned followers. He was a great scholar of the Upanishadas, and knew Sanskrit very well. After listening to Pandit ji he became a follower oftheArya Samaj. Fortunately he is still alive and is an active preacher. In he same way, several other sannyasis accepted the faith ofthe Arya Samaj under his leadership. .....

We should always aim at being good.

Panditji believed that science had failed to solve the problem of life. It could throw no light on our origin. It could not tell us where we would go after death. It is true that with its help we can examine a drop of'blood and analyze objects, but it had failed to satisfy the soul. Only the Vedas could explain the secrets of the Universe.

At one time some learned sannyasis came under the influence of Panditji and became zealous preachers of the Arya Samaj. One of these sannyasis was Swami Achyuta Nand. This learned sanyasi was a leader of a sect of the Vedantists. He had a large number of respectable and learned followers. He was a great scholar of the Upanishadas, and knew Sanskrit very well. After listening to Pandit ji he became a follower oftheArya Samaj. Fortunately he is still alive and is an active preacher. In he same way, several other sannyasis accepted the faith ofthe Arya Samaj under his leadership.

Pandit ji did not neglect his studies in any way during this period. He read several books of Sanskrit, such as the Upanishadas, the Brahmanas, the Nirukta and the Charaka. He also studied astronomy. But what gave him the utmost pleasure were the works of Swami Oayanand. He read them over and over again. He said, "The more I read the books written by Swami Dayanand the more I admire his learning and noble character." He also read a book written by an American philosopher. He was so much impressed by it that he recommended it to all his friends. Though he would lend other books to his friends, he would not part with this one.

In spite ofleading such a busy life he found time for writing books. It is really wonderful how Panditji found so much time for all his varied work. It is said that he used to keep himselfbusy from morning till evening. Whether at home or elsewhere he never wasted his time.His house was 'a meeting-place of all kinds of people. Whoever wanted light on any religious matter went to see him. He explained to people not only the deep wisdom of the Vedas, but also taught them how to uplift themselves.

This active life told upon his health. Scattered here and there in his diary we find many references to his illness. In one place he wrote, "I am ill but I cannot take any rest. I have to deliver an important lecture and must work at it." There were also many things connected with Arya Samaj that worried him. One was the question as to whether classes for training preachers should be attached to the college. The other was the question whether meat-eaters should be kept in the Arya Samaj.

He was also worried at this time about his own future. His diary shows that this question troubled him a great deal. There was the temptation to get a good job, to live well and to grow rich. Nothing could have been easier for Pandit ji than this. He had already started well. He was a Professor in the Government College. Moreover, the Senate of the Punjab University was prepared to recommend him of the post of an Extra Assistant Commissioner. He had, in fact, been asked by the Deputy Commissioner to see him in this connection. What other people could riot get even after much effort could have been had by him for the mere asking. But this kind of career had no real attraction for him.

On the other hand, there was the joy of serving one's fellowrrren. This kind oflife appealed to him. He preferred to sacrifice his own future for the good of his country. He had

found the mission of his life and he wanted to carry it out. He was to be one of the missionaries of the Arya Samaj. He knew there were many difficulties in the way. He had to support his old mother and his own family. But he did not allow this to dissuade him. It was his beliefthat God always looks after those who choose to follow the path of goodness.

At last he made up his mind about the matter. He said that he would not take up any service at all. He believed this would crush his independence of spirit and would not allow him to express his opinions so boldly. It would become impossible for him to obey his own wishes. He would be no more than a slave or hireling and not the master of his own will. He resolved, therefore, to lead an independent life. He said that he would live fortheArya Samaj. For this purpose he thought of starting the Vedic Magazine. In coming to these decisions he turned his back upon the riches of the world.

There was a further problem which gave him no end of trouble. We have already seen that as a boy he was interested in Pranayam. He kept up his interest in it all his life. As time passed, he thought he would like to be a yogi. To achieve this he read widely upon the subject. He also met many persons well versed in this science. To qualify himself for it he began to practise many kinds of austerities. As a result his health broke down.

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

वेद-स्वाध्याय

त्रुटियां दूर हों

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु।
शं नो भवतु, भुवनस्य यस्पतिः।।-यजुः॰ 36 । 2
ऋषिः **दध्यङ्ङाथर्वणः।।** देवता - **बृहस्पतिः।।** छन्दः **निचृत्पङ्क्तिः।।**

शब्दार्थ - मे = मेरे **चक्षुषः** = आँख की, बाह्येन्द्रियों का **यत्** = जो **छिद्रम्** = छिद्र, दोष, न्यूनता है, और **हृदयस्य** = हृदय का, बुद्धि का **मनसः वा** = अथवा मन का जो **अतितृण्णम्** = गहरा घाव है **मे** = मेरे **तत्** = उस छिद्र, घाव को **बृहस्पतिः** = बृहत् संसार का ज्ञानमय पालक परमेश्वर **दधातु** = ठीक कर देवे। **यः** = जो **भुवनस्य** = जगत् का **पतिः** = स्वामी है वह **नः** = हमारे लिए **शम्** = कल्याणकारी **भवतु** = होवे।

विनय - मैंने जो अपनी ओर दृष्टि फेरी है, अपने को टटोला है तो मैं देखता हूँ कि मुझमें त्रुटियाँ-ही-त्रुटियाँ हैं, मैं दोषों से भरा हुआ हूँ। जबतक मैंने अपने को नहीं देखा था, तबतक मैं भी अन्य संसारी लोगों की भाँति व्यर्थ में औरों को बुरा-भला कहता हुआ सन्तुष्ट फिरता था, पर आज आत्मनिरीक्षण करने पर अपनी आँख आदि बाह्यकरणों (इन्द्रियों) की रोग-अशाक्ति आदि विकलताओं को तथा इनकी प्रसिद्ध सदोषताओं को तो मैं अनुभव करता ही हूँ, किन्तु जब मैं अपने अन्दर अधिक घुसता हूँ और अपने मन के तथा हृदय (बुद्धि) के जख्मों को, गहरे घावों को देखता हूँ तो मैं घबरा जाता हूँ। ओह! मेरा मन कितना मलिन है, कितना दुर्बल है! मेरी बुद्धि कितनी विकृत है! अपने इन अन्दर के करणों की इस भयङ्कर दुर्दशा को, इन भयङ्कर कमियों को देखकर मैं प्रायः निराश हो जाता हूँ। सोचने लगता हूँ क्या मेरी ये कमियाँ कभी ठीक भी हो सकती हैं या नहीं? इसलिए हे बृहस्पते! ज्ञानपते! तुम्हीं कृपा करो कि मेरी इन न्यूनताओं को, मेरे इन जख्मों को, शीघ्र भर दो। तुम इस बृहत् जगत् के पालक-रक्षक हो। तुम मेरी भी रक्षा करो। इस जगत् का, इस भुवन का जो भी कोई पति है क्या उसने हमको रचकर हमारी रक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं किया है? नहीं, हे बृहस्पति! भुवनपते! तुम्हारे ध्यान-विचार से मिलनेवाले शक्ति-प्रवाह से हमारे असंख्य छिद्र और हमारी भारी-से-भारी कमियाँ एक बार में ठीक हो सकती हैं। इसलिए हे ज्ञानपते! तुम अब मेरी सब हीनताओं को पूरा कर दो। मेरे ही लिए नहीं किन्तु हम सब, मनुष्यमात्र के लिए कल्याणकारी होओ। तुम सबके धारण करनेवाले हो। सब बिगड़ों को बनानेवाले हो। मैं अपने-आप में तो सर्वथा अशक्त हूँ, कुछ भी नहीं कर सकता हूँ। तुम्हीं, हे बृहस्पते! जब मेरी सब त्रुटियों को भर दोगे, मेरी सब न्यूनताओं को पूर दोगे, तभी मैं पूर्ण पुरुष बन सकूँगा।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

क्रोध को वश में करने के उपाय

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

....मानवीय स्वभाव में क्रोध भी उसका अंग है जिसको दबाने की अपेक्षा उसका प्रकटीकरण अधिक उचित है। परन्तु क्रोध को नियन्त्रित करना भी आवश्यक है अन्यथा इससे व्यवसाय, नौकरी और सम्बन्धों में अड़चन उपस्थित हो सकती है। क्रोध जब हमारी कामनाओं, आकांक्षाओं और इच्छाओं का विघात होता है अर्थात् उनके मार्ग में किसी प्रकार की अड़चन आ जाती है तो क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध में व्यक्ति का विवेक भ्रष्ट हो जाता है और वह कुछ भी करने को उतारू हो जाता है।.

मानवीय स्वभाव में क्रोध भी उसका अंग है जिसको दबाने की अपेक्षा उसका प्रकटीकरण अधिक उचित है। परन्तु क्रोध को नियन्त्रित करना भी आवश्यक है अन्यथा इससे व्यवसाय, नौकरी और सम्बन्धों में अड़चन उपस्थित हो सकती है। क्रोध जब हमारी कामनाओं, आकांक्षाओं और इच्छाओं का विघात होता है अर्थात् उनके मार्ग में किसी प्रकार की अड़चन आ जाती है तो क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध में व्यक्ति का विवेक भ्रष्ट हो जाता है और वह कुछ भी करने को उतारू हो जाता है।

क्रोध से हानि - क्रोध एक दुधारी तलवार है जो अपना और दूसरों का एक साथ अहित करती है। क्रोध की अवस्था में शरीर से अनेक विषैले रसायन उत्सर्जित होकर रक्त को प्रदूषित कर देते हैं जिनसे अनेक रोगों की उत्पत्ति होती है। क्षणिक क्रोध का दुष्परिणाम कई बार आजीवन भोगना पड़ता है। इसीलिये गीता में इसे नरक का द्वार कहा है।

क्रोध को नियन्त्रित करने के उपाय

1. स्वाभिमान को जाग्रत करें - आत्म विश्वास की कमी ही क्रोध का मूल कारण है। आत्मविश्वास रखने वाले को अपनी भूलों पर प्रायश्चित्त नहीं करना पड़ता और उसे सत्य, न्याय तथा बुराईयों से संघर्ष करने की शक्ति प्राप्त होगी एवं मित्र मण्डली में भी सम्मान बना रहेगा।

2. अपनी आदतों को सुधारें -हम स्वयं को छोड़ दूसरों को सुधारने का ठेका लेते हैं। हमें यह जान लेना चाहिये कि क्रोध का कारण कहीं हम ही तो नहीं हैं। हम दूसरों के छिद्रान्वेषण में लगे रहते हैं। हमें दूसरों की आँख में पड़ा तिनका तो दिखाई देता है परन्तु अपनी आँख में पड़ा शहतीर नहीं दिखता। दूसरों का सम्मान करना सीखें। उनके स्वाभिमान को आहत न करते हुये हमें उनके सामने निर्भय होकर अपनी बात कहनी चाहिये।

3. अपने में परिवर्तन लायें - हमारी इच्छा के अनुसार सभी लोग और परिस्थितियां बदल नहीं सकती इसीलिये हमें क्रोध आता है। 'जैसा देश वैसा भेष' इस लोकोक्ति के अनुसार हमें ही परिस्थिति को देखते हुयें अपने में आवश्यक परिवर्तन कर लेना चाहिये। कहा भी है- When you are in Rom do as Roman do. जब आप रोम में हो तो जैसा रोमन लोग करते हैं वैसा ही आचरण करें। रहीम जी कहते है-

या रहीम अब चुप करो समझ दिनन को फेर।
जब नीके दिन आवहिं बनत न लागे देर।।

4. उतावला सो बावला - जब क्रोध आये तो उस स्थान से हट जायें और ठण्डा पानी पीयें तथा आँखें बन्द करके विचार करें। दीर्घ श्वास-प्रश्वास लें। शरीर शिथिल करें। समस्या का असली कारण क्या है इस पर विचार करें और फिर उसका मुकाबला करने के लिये तैयार हो जायें। उतावलेपन में तुरन्त प्रतिक्रिया करना समझदारी नहीं है।

- शेष अगले अंक में

प्रथम पृष्ठ का शेष

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने उपस्थित सभी साथियों को सम्बोधित करते हुए स्पष्ट किया कि आर्य समाज मूर्ति पूजा का तो विरोध करता है लेकिन मन्दिरों के तोड़ने का कभी पक्षधर नहीं रहा है। आर्य समाज तो वह संगठन है जो पुराने समय से मन्दिरों की रक्षा के लिए अपना बलिदान देता आया है। आज हम पूछना चाहते है कि क्या केवल हनुमान मन्दिर ही रास्ते के बीच आया था। अगर इस बात को ध्यान से देखा जाए तो कई मस्जिद और मजार भी रास्तों के बीच में बनी हुई है। उन्होंने कनॉट प्लेस के किसी प्रमुख मस्जिद का बिना नाम लिए उल्लेख करते हुए कहा कि वह बिल्कुल प्रमुख रास्ते पर बनी हुई है लेकिन उसकी तरफ किसी का ध्यान नहीं गया जबकि ये प्राचीन मन्दिर को यहां से हटाया गया। श्री धर्मपाल आर्य जी ने हैदराबाद में निजाम के शासनकाल की याद दिलाते हुए आर्य समाज के ऐतिहासिक बलिदानों की गाथा का जिक्र करते हुए कहा कि जब वहां हिंदुओं के मन्दिरों को तोड़ा जा रहा था तब आर्य समाज के हुतात्माओं ने उनकी रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। आर्य समाज का इतिहास सदा ही वीरता का इतिहास रहा है। हम हनुमान मन्दिर के तोड़े जाने की घोर निंदा और भर्त्सना करते हैं। साथ में हम सरकार से मांग करते है कि जिस स्थान पर वह मन्दिर था वहीं पर पुन: मन्दिर का निर्माण किया जाए। इस अवसर पर श्री धर्मपाल आर्य जी ने कहा कि अगर कानून या प्रशासन के द्वारा किसी भी कारणवश मन्दिरों को ही तोड़ा जाता है तो हम इसका विरोध करते हैं। मन्दिरों के साथ-साथ जो अन्य धार्मिक स्थल हैं उनको भी अनदेखा न किया जाए। अगर उन्हें नहीं तोड़ा जाता तो मन्दिरों को ही क्यों तोड़ा जाता है। यह पक्षपात और तुष्टीकरण की नीति उचित नहीं है। हम इसका पुरजोर विरोध करते है। इस अवसर पर उन्होंने उपस्थित जनसमुदाय सहित अन्य सोशल माध्यमों से भी जुड़े हुए सभी साथियों का धन्यवाद किया और बाद में पुलिस ने सम्मान सहित सभी को रिहा किया।

शोक समाचार

डॉ. अशोक आर्य का निधन

आर्यसमाज के कर्मठ प्रचारक, लेखक और समाजसेवी डॉ. अशोक आर्य जी (मंडी डबवाली) का दिनांक 8 जनवरी, 2021 को लगभग 77 वर्ष की आयु में अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सभा के सम्वर्धकों के मन्त्रोच्चार के बीच सम्पन्न हुआ। वे अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी, तीन सुपुत्र एवं एक पुत्री का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 11 जनवरी, 2021 को आर्यसमाज दयानन्द विहार में सम्पन्न हुई।

पण्डिता सुमित्रा लाल जी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी की पण्डिता एवं डी.ए.वी. कॉलेज, दयानन्द नगर नबुआ की सांस्कृतिक अध्यापिका एवं आर्य युवा दल की उपाध्यक्ष पण्डिता श्रीमती सुमित्रा लाल जी का 30 दिसम्बर, 2020 को सुवा के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया।

आचार्य शिवधन शास्त्री नहीं रहे

देवरिया (उ.प्र.) की आर्यसमाजों के रक्षक, गुरुकुल भटनी के संस्थापक वेद रत्न आचार्य शिवधन शास्त्री जी का 4 जनवरी, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

आचार्य ब्रह्मदेव शास्त्री जी का निधन

आर्यसमाज एवं वैदिक संस्कृति के प्रबल समर्थक, प्रचारक, प्रसारक, कनकपुर (अलीगढ़) निवासी शास्त्रार्थ महारथी आचार्य ब्रह्मदेव शास्त्री जी का दिनांक 11 जनवरी, 2021 को आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

फरीदाबाद में शहीदी सप्ताह सोल्लास सम्पन्न

डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल सैक्टर -14 फरीदाबाद (हरियाणा) द्वारा दिनांक 19 से 27 दिसम्बर 2020 तक 'शहीदी सप्ताह' अतीव उत्साह से मनाया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा तथा आर्य युवा समाज हरियाणा द्वारा किया गया था।

दिनांक 21/12/20 अमर शहीद 'राजेंद्र नाथ लाहिड़ी जी' को समर्पित किया गया था। अमर शहीद श्री राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए इस विद्यालय के शिक्षक श्री हरि ओ३म् शास्त्री ने उन्हें सबसे कम उम्र कुल 26 वर्ष की अल्पायु में ही देश की स्वतन्त्रता हेतु शहादत पाने वाला वीर योद्धा बताया। उनके पिता 'श्री क्षिति मोहन लाहिड़ी' व बड़े भाई भी देश के क्रांति कारी दल के सक्रिय सदस्य होने के कारण जेल का कठोर दंड भोग रहे थे।

काकोरी काण्ड में श्री राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, ठाकुर रोशन सिंह के साथ श्री राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी जी ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया था।वे इस कांड के दौरान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी में एम. ए. (इतिहास) के प्रथम वर्ष के छात्र थे और वहीं पर प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री शचींद्रनाथ सान्याल जी से भेंट हुई और वे क्रांतिकारी दल में शामिल हो गए। क्रान्तिकारियों को हथियार मुहैया कराने हेतु काकोरी में ट्रेन लूटने के कारण उन्हें अन्य तीनों क्रांतिकारियों के साथ फांसी की सजा हुई। फिर भी अंग्रेजी सरकार ने उनसे भयभीत होकर अन्य क्रान्तिकारियों से दो दिन पहले दिनांक 17 दिसम्बर 1927 को चुपचाप गोंडा जेल में फांसी दे दी । इसके साथ ही श्री राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी अपने देश की स्वतन्त्रता हेतु सहर्ष बलिदान हो गये।

इसके बाद विद्यालय के शिक्षक श्री देवेन्द्र कुमार ने शहीदों की याद में एक सुन्दर गजल प्रस्तुत किया।

इस कार्यक्रम के अन्तिम दिन विद्यालय के सभी शिक्षक शिक्षिकाओं ने मिलकर बड़ी श्रद्धा से यज्ञ किया और देशभक्ति परक गीत प्रस्तुत किये।

इस प्रकार यह शहीदी सप्ताह बड़े हर्ष और उल्लास से विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती अनीता गौतम जी की प्रेरणा से संपन्न हुआ।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 11 जनवरी, 2021 से रविवार 17 जनवरी, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 14-15/01/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-22-2023

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 13 जनवरी, 2021

ओ३म्

ये गणतंत्र दिवस होगा कुछ खास

72वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर

आर्य सन्देश टीवी

केवल बच्चों के लिए

ला रहा है राष्ट्र के महापुरुषों पर आधारित

ऑनलाइन फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता

अपने बच्चों को देशभक्ति के संस्कार देने के लिए किसी महान देशभक्त का कोई विशेष वाक्य याद करवाएं तथा अच्छे से वेश में तैयार करके वीडियो बनाकर भेजें...

विजेताओं को दिया जाएगा आकर्षक पुरस्कार

अपना वीडियो अपने नाम और पते के साथ हमें भेजें

ईमेल aryasandeshtv@gmail.com

व्हाट्सएप्प 7428894010

आयु वर्ग - 3 वर्ष से 15 वर्ष

नोट :- वीडियो बनाते समय फोन को HORIZONTAL रखें, प्रकाश का विशेष ध्यान रखें और कैमरे को न हिलाएं

वीडियो भेजने की अन्तिम तिथि 20 जनवरी 2021

Google Play Store से Arya Sandesh TV एप्प डाऊनलोड करें

खुशखबरी! खुशखबरी!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

के अन्तर्गत

वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित

वैदिक साहित्य

अब

amazon

पर भी उपलब्ध

अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें

https://amzn.to/3i3rKl7

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

मो. 09540040339, 011-23360150

प्रतिष्ठा में,

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज मदनगीर

नई दिल्ली-110062

प्रधान : श्री हरिचन्द आर्य

मंत्री : श्री अनन्तराम आर्य

कोषाध्यक्ष : श्रीमती सरला गम्भीर

आर्य समाज कस्तूबा नगर

डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली-110003

प्रधान : श्री अजय सहगल

मंत्री : श्री हर प्रकाश खन्ना

कोषाध्यक्ष : श्रीमती सुदेश रानी राव

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां! तो

जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उनकी ईमेल आई.डी. लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट/टेलिग्राम द्वारा भेजा जाता रहेगा। - सम्पादक

घर वापसी के सम्बन्ध में आवश्यक सूचना

आर्यसन्देश के समस्त सम्मानीय पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि आपके सम्पर्क में यदि कोई ऐसे महानुभाव हों जो ईसाई से वैदिक धर्म में पुन: दीक्षित हुए हों अथवा जिन्होंने स्वेच्छा से वैदिक धर्म को स्वीकार किया हो तो कृपया उनका नाम, पता, सम्पर्क सूत्र, मो. नं. का विवरण aryasabha@yahoo.com पर ईमेल भेजें अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली-110001 के पते पर डाक द्वारा भेजें। - *महामन्त्री*

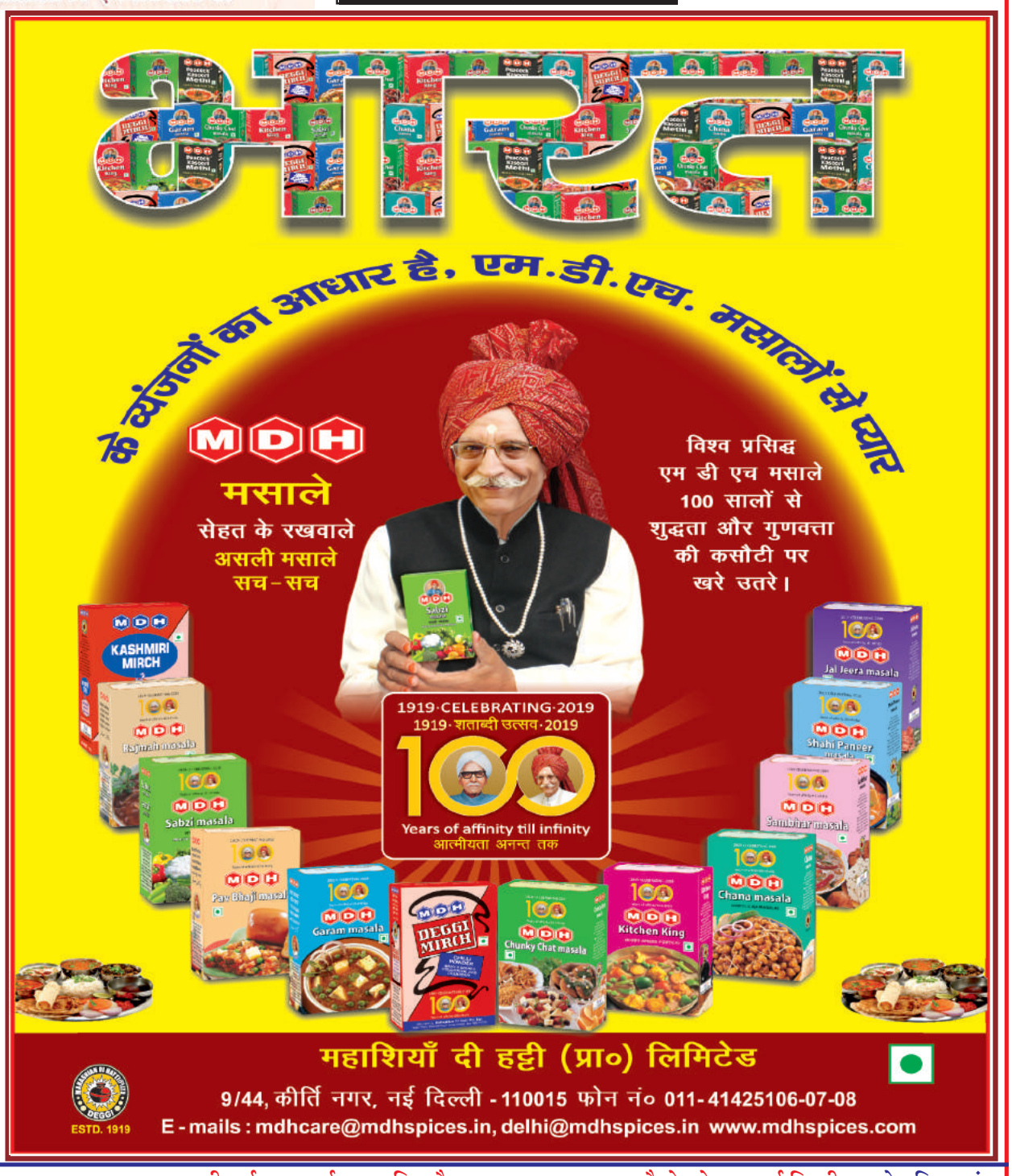

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह